







सम्पादकीय

## न्याय दिलाने की सरकार की मंशा पर सवाल क्यों, कहीं सियासत तो

संदेशखाली के चेहरे की कुरुपता देख पूरा देश क्षम्भ है, पर पीड़ित महिलाओं को न्याय दिलाने की सरकार की मंशा पर सवाल यों उठ रहे हैं। 12 फरवरी को राज्यपाल आनंद बोस जब संदेशखाली दौरे पर थे, तो रोती-कलपती कुछ महिलाओं ने उन्हें राखी बांधकर रक्षा की गृहार लगाई। देश की इकलौती महिला मुख्यमंत्री और वाम राज में महिला उत्पीड़न को लेकर सङ्क पर संग्राम करने वाली ममता के राज में ऐसा भी होता है, किसी ने कल्पना तक नहीं की थी। बंगाल के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सुंदरबन के महाने पर बसे संदेशखाली के चेहरे की कुरुपता आज पूरा देश देख रहा है। महिलाओं की आधी रात में पार्टी ऑफिस में बहाने, जमीन और जलागार हड्पने, दुकानदारों से अवैध वसूली करने, इलाके को विपक्ष शून्य करने के लिए हमले करने जैसी दर्जनों शिकायतों का निपटारा करने वाला कोई नहीं था। संवेदनहीन पुलिस अब प्रभावित इलाकों में घूम-घूमकर लोगों, खासकर महिलाओं को उत्तर 24 परगना के डीएम शरद कुमार द्विवेदी, बशीरहाट के एसपी और एसपी को 19 फरवरी को दिल्ली में हाजिरी लगाने को कहा है। 14 फरवरी को संदेशखाली मामले पर कलकत्ता हाईकोर्ट ने स्वतः सङ्ज्ञा लेकर पूरे इलाके में जारी निषेधाज्ञा खारिज कर दी। उसी दिन सुकांत को रोककर पुलिस प्रशासन ने उनका विशेषाधिकार हनन किया। याद करें, राजीव कुमार वही आईपीएस अधिकारी है, जिन्हें शारदा चिटफॉड मामले में सीबीआई की संभावित गिरफतारी से बचाने के लिए ममता धरने पर बैठी थी। कलकत्ता हाईकोर्ट ने साफ कहा कि पुलिस ग्रामीण महिलाओं के विरोध को कुचलने के बदले अपराध में शामिल कथित दो प्रमुख आरोपियों की तलाश करे। मालूम हो कि कई सौ कोरोड रुपये के राशन घोटाले के सिलसिले में छापा मारने गई प्रवर्तन निदेशालय की टीम पर शाहजहां के गुर्गी ने हमला किया था और तभी से वह फरार है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग तक कह चुका है कि बंगाल में कानून



मीडिया के सामने मुँह नहीं खोलने की हिंदायत दे रही। यहां की सांसद नुसरत जहां को इलाके की महिलाओं के आंसू पौंछे चाहिए थे, पर वह 14 फरवरी को इंस्टाग्राम पर वेलेटाइन दे मना रही थीं। भ्रष्टाचार के मामलों में सरकार के एक दर्जन से ऊपर मंत्री, उनके बेटे-बेटी व अफसर जेल की हवा खा रहे हैं, उस पर संदेशखाली कांड ने जले पर नमक छिका है, पर सरकार के घेरे पर शिकन तक नहीं है। सरकार पूरी तातक से इस इलाके में विपक्षी नेताओं का प्रवेश रोकने में लग गई है। राज्य भाजपा अध्यक्ष और बालुरुपाठ से लोकसभा सांसद सुकांत मजूमदार संदेशखाली जाते समय सूरक्षाकमियों से झङ्गप में धायल हो गए और उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष से शिकायत की। उनकी शिकायत पर लोकसभा की विशेषाधिकार रक्षा समिति ने मुख्य सचिव भगवती प्रसाद गोपलिका, पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार, का शासन नहीं, बल्कि शासक का कानून चलता है विधानसभा में ममता ने शाहजहां का बचाव किया और भाजपा व आरएसपस पर दोष मढ़ा। जून, 2019 में भी तीन राजनीतिक हत्याओं के मामले में शेष शाहजहां का नाम आया था, पर तब भी ममता ने उसका बचाव किया था। वाम जमाने में शेष शाहजहां की औंकात एक स्थानीय रंगबाज की थी, पर ममता की शरण में आने के बाद रसूख के साथ उसकी संपत्ति भी तजी से बढ़ी। बताया जाता है कि आज वह कई सौ करोड़ रुपये की संपत्ति का मालिक है। शिक्षा घोटाले में पार्थ चटर्जी, पशु तस्करी घोटाले में अनुव्रत मंडल, राशन घोटाले में जल में बंद मंत्री ज्योतिप्रिय मलिक सहित काले कारनामे करने वाले दर्जनों अभियुक्तों का ममता ने हर बार बचाव किया।

मुख्यमंत्री सुखविंद्र सुक्खू ने पेश किया 58.444 करोड़ का बजट

सीएम सुकूब ने घोषणा की कि जनवरी 2016 से 31 दिसंबर 2021 के बीच सेवानिवृत्त हुए लीव एनक्रेसिमेंट और प्रेचुटी से सर्वोच्च एरियर का भूमानां 1 मार्च 2024 से चरणबद्ध तरीके से शुरू हो जाएगा। सभी कर्मचारियों और पेंशनरों के वेतन तथा पेशन से जाएगा। सभी सहकारी सभाओं का ऑनलाइन पंजीकरण किया जाएगा। बढ़े हुए मानदेय के साथ आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को अब 10000 रुपये मासिक, मिन्ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को 7000 रुपये, सहायिका को 5500, आशा



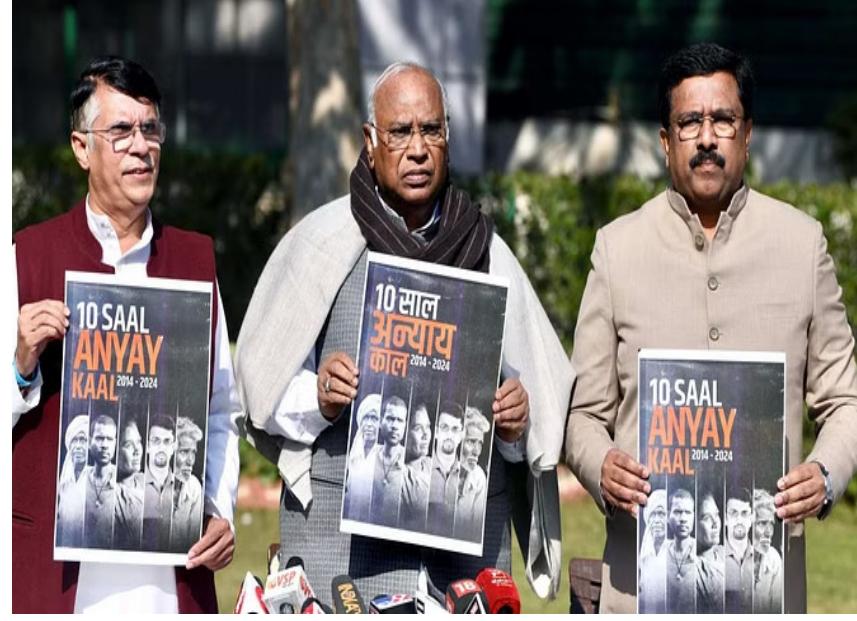
दंग से 1 मार्च 2024 से शुरू कर दिया जाएगा। वहीं, 1 अप्रैल 2024 से चार प्रतिशत की दर से महंगाई भर्ते की किश्त जारी कर दी जाएगी। इस पर लगभग 580 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष अतिरिक्त व्यय किए जाएंगे। 1 अप्रैल 2024 के बाद प्रदेश के कर्मचारी अपने सेवाकाल में कम से कम दो बार एलटीसी की सुविधा मिलेगी। दिहाड़ीदारों को 25 रुपये बढ़ोतारी के साथ 400 रुपये प्रतिदिन दिहाड़ी मिलेगी। आउटसोर्स कमियों को अब चूनूतम 12,000 रुपये प्रतिमाह मिलेंगे। पंचायत वैटरनी असिस्टेंट को मिलने वाले 7000 रुपये 4,500, जलवाहक (शिक्षा विभाग 5000, जल रक्षक 5300, जल शत्रु विभाग के बहुदेशीय कार्यकर्ता के 5000, पैरा फिटर तथा पंप ऑपरेटर 6300, दिहाड़ीदारों को 25 रुपये बढ़ोतारी के साथ 400 रुपये प्रतिदिन दिहाड़ी, आउटसोर्स कर्मी अब चूनूतम 12,000, पंचायत चौकीदार के 8000, राजस्व चौकीदार को 5800 राजस्व लंबरदार 4200 रुपये प्रतिमाह मिलेंगे। इसके साथ सिलाइ अध्यापिकाओं के मानदेय में 500 एसएमसी अध्यापकों के मानदेय में 1900 रुपये, आईटी शिक्षकों के 1900, एसपीओ को 500 रुपये

**विपक्ष को स्मार्ट होने की जरूरत, तार्किक आलोचना के साथ विकल्प भी जरूरी**

लोकतंत्र की जीवन्तता प्रतिस्पर्धी विचारों पर टिकी होती है। विपक्ष सरकार की आलोचना तो करता है, लेकिन वैकल्पिक मॉडल पेश नहीं करता। कांग्रेस के 2019 के घोषणा पत्र में कुछ विचार जरूर थे, लेकिन यह उन राज्यों तक में लाग नहीं किए गए, जहां वह सत्ता में थीं। यह चुनावों से पहले का वह मौसम है, जब राजनेता अतिम क्षण की लामबंदी के लिए बहुत अधिक दबाव दें और

हस्तानरण के फॉर्मूले के कारण होता है, जिसका आधार यह है कि जो राज्य जितना गरीब और अधिक आबादी वाला होगा, उसे उतना ही अधिक धन मिलेगा। यह सच है कि आजादी के बाद से भारत का विकास मंत्र यह रहा है कि कम समृद्ध राज्यों को विकास के लिए संसाधनों का केंद्रित उपयोग करने की ओर जारी करें। इसके अनुरूप, विकास के लिए विकासित होना चाहिए। ऐसे में, बेहतर प्रदर्शन करने वाले राज्यों की नाराजगी समझी जा सकती है। सवाल यह है कि क्या वैसे राज्य जो बेहतर प्रदर्शन का चक्र बनाए रखते हैं, उन्हें कोई इनाम दिया जा रहा है?, क्या यह फॉर्मूला उस राज्य को किसी तरह से पुरस्कृत करने वाला दलों को हर राज्य की राजधानियों में नए हस्तानरण फॉर्मूले और घोषणापत्र पर वैकल्पिक मॉडल रखकर एक सम्मेलन बुलाना चाहिए था, जिसमें वित्तमंत्री और अर्थशास्त्री भी शामिल हों और लोगों से इस पर मतदान करने के लिए कहना चाहिए। इस पूरे हफ्ते अर्थशास्त्र पर प्रश्नस्तुति किया। कांग्रेस ने भी बौरे देरी किए 'दस साल अन्याय काल' शीर्षक से 54 पृष्ठों का एक काला पत्र जारी करके इसका प्रतिकार किया। सरकार के गांव गर्फ़ करने लायक बहुत कुछ है-डिजिटल और भौतिक अवसरचनाओं को बढ़ावा देने से लेकर राजनीतीय अनुशासन और सम्बिंदियों में उड़ने वाले 7.3 गधीर होती। लोगों के मन में बेरोजगारी का विचार उनके अनुभवों और आंकड़ों के बीच के स्पायी विरोधाभास को दिखाता है, जो सरकारी विभागों में 20 लाख से ज्यादा खाली पदों और अप्रतिक्रियों के लिए मारमारी में दिखता है। भारत 15 लाख से अधिक इंजीनियर वैदा करता है और इस महीने के पार भ

के लिए विकसित होना चाहिए। ऐसे में, बेहतर प्रदर्शन करने वाले राज्यों की नाराजगी समझी जा सकती है। सगल यह है कि क्या वैसे राज्य जो बेहतर प्रदर्शन का चक्र बनाए रखते हैं, उन्हें कोई इनाम दिया जा रहा है? क्या यह फॉर्मूला उस राज्य को किसी तरह से पुरस्कृत करने वाला दलों को हर राज्य की राजधानियों में नए हस्तांतरण फॉर्मूले और घोषणापत्र पर वैकल्पिक मॉडल रखकर एक सम्मेलन बुलाना चाहिए था, जिसमें वित्तमंडी और अर्थशास्त्री भी शामिल हों और लोगों से इस पर मतदान करने के लिए कहना चाहिए। इस पूरे हफ्ते अर्थशास्त्र पर प्रश्नस्त किया। कांग्रेस ने भी बौर देरी किए 'दस साल अन्याय काल' शीर्षक से 54 पृष्ठों का एक काला पत्र जारी करके इसका प्रतिकार किया। सरकारी विभागों में 20 लाख से ज्यादा खाली पदों और कठिनरियों के लिए मारमारी में दिखता है। भारत 15 लाख से अधिक इंजीनियर पैदा करता है और इस महीने के पार भगवान् भीर होती। लोगों के मन में बोरोजगारी का विचार उनके अनुभवों और आंकड़ों के बीच के स्पायी विरोधाभास को दिखाता है, जो सरकारी विभागों में 20 लाख से



अधिक हिस्सा दिया जाए। उदाहरण के लिए, बिहार और उत्तर प्रदेश सबसे अधिक आबादी वाले राज्य हैं, जहां प्रति व्यक्ति आय सबसे कम क्रमशः 54,111 रुपये 10 और 83,565 रुपये हैं और वे 3 अंतिरिक्त सहायता के हकदार भी हैं। यह भी उन्ना ही सच है कि नई सरकारी में किसी भी व्यवस्था को बढ़ावा देने और होतोस्हित करने के बीच तालमेल है, जिसने निवेश के लिए माहौल में सुधार किया है और रोजगार को बढ़ाया है। जाहिर है कि यह बिल्कुल सही समय है, जब करों के बंटवारे के कार्यालय पर एक बार फिर विचार किया जाए। लेकिन यह संदर्भ संघ और राज्यों के बीच परिपक्व संवाद की मांग करता है, न कि तीखी बयानबाजी की। आदर्श रूप से, कांग्रेस, वामपंथी और अन्य क्षेत्रीय राजनीति चलती रही। सरकार ने यूपीए सरकार की कई विफलताओं को सुचाबद्ध करते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था पर 59 पृष्ठों का एक श्वेत पत्र जारी किया, जिसका केंद्रीय विषय फिजूलखर्ची और भ्रष्टाचार है। और इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि कैसे इस सरकार ने अर्थव्यवस्था को नाजुक स्थिति से मजबूती तक पहुंचाया और अमृत काल का मार्ग सभियों की कीमतें 27, दालों की 20, मसालों की 19.6 और अनाज की 9.9 फीसदी तक बढ़ी है। दिलचस्प बात यह है कि पोल्ट्री और मांस उत्पादों की कीमतें उतनी नहीं बढ़ी हैं। यह लगभग ऐसा ही है, मानो मुद्रास्फीति शाकाहारी हो गई है। शुक्र है कि सरकार के पास 81 करोड़ नागरिकों के लिए मुक्त भोजन कार्यक्रम है, अन्यथा स्थिति से किसी का भी उन राज्यों में लागू नहीं किया गया, जहां वह सत्ता में थी। स्पार्ट नेताओं का तर्क है कि नेतृत्व प्रभावी ढंग से 'एक' और 'एक' को मिलाकर 'तीन' बनाने पर निर्भर करता है। लेकिन विपक्ष में 18 से अधिक पार्टियां कुछ सकारात्मक नहीं कर पा रही हैं। सैद्धांतिक रूप से, लोकतंत्री की जीवंतता प्रतिस्पर्धी विचारों पर टिकी होती है।

**ड़ा राजनीतिक मुद्दा बनता संदेशखाली**

की कवायद में जुटे हैं। उधर, लोकसभा की प्रिवेलेज कमेटी ने भी मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक समेत तीन अधिकारियों को अपने समक्ष हाजिर होने का समन भेजा है। राष्ट्रीय महिला आयोग की टीम पहले ही इलाके का दौरा कर चुकी है। लेकिन अब वह दोबारा गांव के दौरे पर आने वाली है। इस बार टीम के सदस्य मुख्य सचिव और पुस्ति महानिदेशक से भी मुलाकात करेंगे। राष्ट्रीय जनजाति आयोग की टीम ने तो इलाके के दौरे के बाद दिल्ली लौट रही है, जबकि उन्हें दूसरे दौरे के बाद वापस लौट रही है। ताकि वह काम कर सकें। इसलिए विपक्षी नेताओं को वहाँ जाने से रोका जा रहा है। पार्टी के एक नेता के मुताबिक, भाजपा तो इस मुद्दे पर सिंगर और नंदीग्राम की तर्ज पर आठोलन खड़ा करने की कवायद में जुट गई है। सीपीएम के प्रदेश सचिव मोहम्मद सलीम का कहना है कि इस घटना से साफ है कि तृणमूल कांग्रेस में अपराधियों की भरमार है। वहाँ की महिलाएं अब तृणमूल कांग्रेस के समर्थन वाले हैं।

**विश्व सिनेमा की जादुई दुनिया रोमांटिक निर्देशक- वॉन्ग कार वाई**

निर्देशक बनने के पहले वॉन्ग कार्ड-वाई एक स्क्रीनप्ले राइटर बने और जैसा कि रिवाज है स्क्रीनप्ले राइटिंग मिलजुल कर किया जाता है, वॉन्ग ने भी पहला रोमांटिक ड्रामा 'वन्स अपॉन ए रेनबो' दूसरों के साथ मिल कर लिखा। 'एज ट्रॉयर्स गो बॉय' उनकी निर्देशित पहली फिल्म थी। आजकल वैल्न्टाइन (प्रेरोमांस) का समय चल रहा है और उन्हें दूसरा दैनिक जीवन का अवधारणा दिया जाता है। पहले स्त्री उसे मात्र लुभा रही थी पर बाद में दोनों में अच्छी दृश्यांगन हो जाती है। इसी साल उन्होंने भविष्योन्मुख फिल्म '2046' बनाई। एक साइंस फिक्चर के लेखक के जीवन में कुछ वर्षी में कई स्त्रियों का प्रवेश होता है। फिल्म ने 48 पुरुषों अपनी झोली में किए। 1995 में वॉन्ग कार-वाई ने 'फॉलन एंजल्स' बनाई। उसके बाद उन्होंने दो दूसरी फिल्मों का निर्देशन करने के लिए अपनी जोड़ी की विश्व सिनेमा की जादुई दुनिया की ओर बढ़ दिया।

बंगल में सबसे बड़ा राजनीतिक मद्दा बनता संदेशखाली

इस मुद्दे पर विधानसभा में हांगमा हो चुका है। इसके बाद विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी समेत भाजपा के छह विधायकों ने इस सत्र के लिए निलंबित कर दिया गया है। लेकिन बवाल थमने की बजाए तेज ही हो रहा है। इस महीने के अखिर में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को लकाता वेट दौरे पर आएंगे। लोकसभा चुनाव से पहले पश्चिम बंगाल में संवेद्धाली सबसे बड़ा राजनीतिक मुद्दा बनता जा रहा है। उत्तर 24-परगना जिले में बांग्सुदेश की सीमा के करीब बसे इस गांव की महिलाओं ने तृणमूल कांग्रेस नेताओं के कथित यौन उत्पीड़न और अत्याचारों के खिलाफ जो अंदोलन शुरू किया था उसकी आंच तो अब काफी हद तक धीमी पड़े लगी है। लेकिन इस मुद्दे पर सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस और विपक्षी दलों के बीच छिड़ा घमासान लगातार तेज हो रहा है। अब यह मुद्दा धीरे-धीरे राज्य बनाम केंद्र में भी बदलने लगा है। बीते सप्ताह महिलाओं का अंदोलन शुरू होने की कवायद में जुटे हैं। उधर, लोकसभा की प्रिविलेज कमेटी ने भी मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक समेत तीन अधिकारियों को अपने समक्ष हाजिर होने का समन भेजा है। राष्ट्रीय महिला आयोग की टीम पहले ही इलाके का दौरा कर चुकी है। लेकिन अब वह दोबारा गाँव के दौरे पर आने वाली है। इस बार टीम के सदस्य मुख्य सचिव और पुसि महानिदेशक से भी मुलाकात करेंग। राष्ट्रीय जनजाति आयोग की टीम ने तो इलाके के दौरे के बाद दिल्ली लौट कर राष्ट्रपति को सौंपी अपनी रिपोर्ट में राज्य में धारा 356 का इस्तेमाल करने की सिफारिश की है। यह पूरा मामला बीते महीने राशन घोटाले के सिलसिले में तृणमूल कांग्रेस नेता शाहजहां शेख के घर ईडी के छापे से शुरू हुआ था। तब कथित पार्टी समर्थकों के हमले में ईडी के तीन अधिकारी घायल हो गए थे। शाहजहां उसी दिन से फरार है। उसके जिन दो शारीरिकों पर योन उत्पीड़न और जर्मीन पर जबरन कड़े के आरोप लगे हैं उन्में से एक उत्तम सर्वीस एवं कांग्रेस नेता के बीच विवाद हो रहा है। लेकिन कर रही है ताकि हकीकत सामने नहीं आ सके। इसलिए विपक्षी नेताओं को वहां जाने से रोका जा रहा है। पार्टी के एक नेता के मताविक, भाजपा ने इस मुद्दे पर सिंगर और नंदीग्राम की तरफ पर आंदोलन खड़ा करने की कवायद में जुट गई है। सीपीएस के प्रदेश सचिव मोहम्मद सलीम का कहना है कि इस घटना से साफ है कि तृणमूल कांग्रेस में अपराधियों की भरमार है। वहां की महिलाएं अब तृणमूल कांग्रेस के समर्थन वाले गुंडों के अत्याचारों के खिलाफ खुल कर सामने आ गई हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अधीर चौधरी ने भी बगाल में कानून व्यवस्था की स्थिति पर सवाल उठाते हुए राष्ट्रपति शासन की मांग उठाई है। महिलाओं की बगावत से श्रूती दौर में असमंजस में पड़ी तृणमूल कांग्रेस ने डैमेज कंट्रोल की कवायद के तहत पार्टी के एक नेता उत्तम सर्दार को पुलिस के हाथों रिफरतर कराया और उसे छह मास के लिए लगे हैं उन्में से एक उत्तम सर्वीस एवं कांग्रेस नेता के बीच विवाद हो रहा है। लेकिन एवं स्क्रीनप्यू राइटर बने। जब वे मात्र पांच साल के थे उनकी मां उन्हें शंघाई से लेकर हॉनकांग चली आई, जबकि होटल डॉयरेक्टर उनके पिता, उनका भाई और उनकी बहन वहीं शंघाई में रह गए। पहले वॉन्ना काई-वाई ने ग्राफिक डिजाइनिंग का प्रशिक्षण लिया और इसके बाद टीवी नाटक की शिक्षा ली। यहीं से उनके फिल्म में प्रदेश का रास्ता खुला। निर्देशक बनने के पहले फॉर लव' देखना एक बहुत सुकृनदायक अनुभव है। हॉनकाना के फिल्म निर्देशक एवं स्क्रीनप्यू राइटर कर किया जाता है, वॉन्ना ने भी पहला जाता है। पहले स्त्री उसे मात्र लुभा रही थी पर बाद में दोनों में अच्छी ट्रियुनिंग हो जाती है। इसी साल उन्होंने भविष्योन्मुख फिल्म '2046' बनाई। एक साइंस फिक्शन के लेखक के जीवन में कुछ वर्षों में कई स्ट्रियों का प्रवेश होता है। फिल्म ने 48 पुरस्कार अपनी झोली में किए। 1995 में वॉन्ना कार-वाई ने 'फॉलॉन एजल्स' बनाई। करीब डैड धंटे की इस क्राइम-ड्रामा फिल्म में हॉन्ना कॉन्ना का एक पेशेवर गुंडा इस काम से निकलना चाहता है, इतना ही नहीं वह अपने पेशों की



तो गिरफ्तारी के बाद पार्टी से निलंबित किया गया है। लेकिन दूसरा शिव प्रसाद हाजरा भूमिगत है। स्थानीय महिलाओं ने शाहजहां शेख और उसके दो सहयोगियों-शिव प्रसाद उर्फ शिव हाजरा और उत्तम सर्दार पर स्थानीय लोगों की जमीन जबरन हड्पने और महिलाओं के साथ अत्याचार और बलात्कार जैसे गंभीर आरोप लगाए हैं। अपनी मांग के समर्थन में महिलाएं लगातार प्रदर्शन कर रही हैं। सरकार की ओर से गठित 10-सदस्यीय जांच समिति ने भी गंव का दौरा कर महिलाओं से बातचीत की है। बारासात रेंज के डीआईजी सुमित कुमार ने पत्रकारों से बातचीत में दावा किया कि अब तक मिली घार शिकायतों में से किसी में रेप का कोई आरोप नहीं है। अब तक ऐसी कोई लिखित शिकायत नहीं मिली है। उन्होंने भरोसा दिया कि ऐसी कोई शिकायत मिलने पर कहीं कार्रवाई की जाएगी। संदेशखाली में तृणमूल कांग्रेस नेताओं के कथित अत्याचार और यौन उत्पीड़न के साथ ही महिलाओं का आंदोलन अब राजनीतिक मूद्दा बन गया है। तमाम विषयकी दलों ने इसके लिए सत्तारूढ़ पार्टी को कठघरे में खड़ा करते हुए संदेशखाली अभियान शुरू किया है। लेकिन किसी को भी इलाके में नहीं जाने दिया गया है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सुकृत मजूमदार कहते हैं कि संदेशखाली की घटना से पता चलता है कि बंगल में अपराध का किस कदर राजनीतिकरण हो चका है। सरकार

विपक्ष की ओर से लगातार बढ़ते दबाव के बाद अब पार्टी जवाबी हमले पर उत्तर देते हुए ऐसे आरोपों को बंगल विरोधी प्रचार बता रही है। तृणमूल कांग्रेस का दावा है कि इलाके में महिलाओं के हवाले बलात्कार और न उपीड़न के जिन आरोपों की बात कही जा रही है वह निराधार है। उसका कहना है कि पुलिस की विशेष टीम और राष्ट्रीय महिला आयोग के प्रतिनिधिमंडल से बातचीत करने वाली किसी भी महिला ने ऐसे आरोप नहीं लगाए हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने विधानसभा अपने बयान में संदेशखाली की घटना के लिए ईडी, आरएसएस और भाजपा को जिम्मेदार ठहराया है। उनका आरोप था कि विपक्षी दल मौके पर हिंसा को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं। तृणमूल कांग्रेस के नेता और स्थानीय पुलिस भले रेप और शरीरिक अत्याचार के आरोपों को निराधार बता रहे हो, महिलाएं अपनी बात पर अझी हैं। स्थानीय महिलाओं का आरोप है कि तृणमूल नेताओं की इस तिकड़ी ने गांव वालों को डारा-धमका कर किड़ियों के मोल उनकी जमीन खरीद ली है। कई मामलों में तो उनके पैसे भी नहीं दिए गए हैं। इसके साथ ही गव के लोगों को तृणमूल नेताओं की जमीन और खेत पर काम कराया जाता है लेकिन मजदूरीया तो नहीं दी जाती या किस नामामत्र की दी जाती है। पैसे मांगने

के इस फिल्म का मूल शीर्षक ई बर्लू हार्डपैप है। मैं रंगों की बाहर लेकर आते हैं। ये रंग आपको वास्तविक रूप से स्पर्श करते हैं, गरे लाल, पीले, भूरे और उनकी गहन छाता मनमोहक है। क्यों न हो जब नायक-नायिका प्रेम के मूढ़ में है। मगर यहीं असली टिवस्ट है, पूरी कहानी में वे दैहिक प्रेम नहीं करते हैं, ऐसा नहीं है कि कर नहीं सकते हैं, मगर उन्होंने तय किया है, वे ऐसा करेंगे नहीं। तय किया है, क्योंकि वे नहीं चाहते हैं वे ऐसा करें, जैसा उनके साथी कर रहे हैं। अगर वे ऐसा करते हैं, तो फिर नायक की पतनी और नायिका के पति और उन दोनों में अंतर क्या रह जाएगा? दोनों के साथियों का विवाहेतर संबंध चल रहा है। अतः नायक मिस्टर चाह (टोनी लेउना) और नायिका सुली-ज्ञन (मैरी चेउना) बार-बार मिलते हैं, कभी सुलियों पर, कभी सड़क पर, कभी होटल से खाना ले जाते हुए, मगर सोने के लिए वे अपने-अपने घर चले जाते हैं। समय 1962 का है और स्थान हॉन्काकोना का भीड़ भरा इलाका। दोनों पड़ोसी हैं, अतः टकराना होगा ही। इस अनोखी प्रेम कहानी को एक बार देखना बनता है, आप दोबारा इसे देखना चाहोंगे। फिल्म दिखाती है कि लाई (टोनी लेउना) तथा हो (लेसी चेउना) दोनों साथ रहते हुए सदा झगड़ते हैं, उनका एक साथ रहना कठिन है, मगर एक-दूसरे के बिना रह भी नहीं सकते हैं। फिल्म हॉन्काकोना, जापान तथा साउथ कोरिया का को-प्रोडक्शन है। 17 जुलाई 1958 को चीन के शंघाई में जन्मे वैना रामानग्राम प्रान्त के लिए निर्देशक फिल्म मिल कर लिखा। 'एज टीयर्स गो बॉय' उनकी निर्देशक पहली फिल्म थी। तीन साल बाद 1990 में उन्होंने 'डेज ऑफ बीइंग वाइट' बनाई। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चाक्षुष रूप से अनोखे, शैलीगत विशेषता तथा भावात्मक फिल्म निर्देशक के रूप में पहचाने जाने गए वैना कार-वाई की पहली दोनों फिल्मों को खास सफलता नहीं मिली, लेकिन उनकी तीसरी फिल्म 'चुंगकिंग एक्सप्रेस' (1994) ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय सिने-फलक पर स्थापित कर दिया। 8 पुरस्कार जीतने वाली इस फिल्म में हॉन्काकोना के दो उदास पुलिस वालों को घार रहता है, एक को एक रहस्यमयी अंडरवर्ल्ड और दो और दूसरे को एक खूबसूरत वायरी लेन्जाइट कुकुर की वेटेस से। इस फिल्म ने टैरेनीकों को आकर्षित किया और वैना को फिल्म अमेरिका में प्रवेश पार्गी। सदैर काला चश्मा फूनने वाले वैना एक्शन सीन में हैडलेक कैमरे का उपयोग करते हैं। 2007 में वैना ने 'माई हुबेरी नाइट्स' बनाई, जिसे उन्होंने लॉरेंस ह्यूक के साथ मिल कर लिखा। इस फिल्म में आपको नोरा जोन्स, जूड लॉ, नैटली पोर्टमैन जैसे हॉलीवुड के अभिनेता नहर आएंगे। एक एककी रसी अपने आत्म की खोज में अमेरिका के आर-पार की यात्रा पर निकलती है, रास्ते में तमाम तरह के लोगों से मिलती है। यह उनकी पहली इंग्रिजी फिल्म है, इसकी शूटिंग भी अमेरिका में हुई है। 2004 में करीब एक घंटे की फिल्म 'द हैंड' बनाते हैं, जिसमें एक दर्जा का सहायक एक स्त्री ग्राहक के कपड़े डिजाइन करता

# विश्व सिनेमा की जादुई दुनिया रोमांटिक निर्देशक- बॉन्द कार वाई

निर्देशक बनने के पहले वैना कार्ड-वाई एक स्क्रीनप्यू राइटर बने और जैसा कि रिवाज है स्क्रीनप्यू राइटिंग मिलजुल कर किया जाता है, वैना ने भी पहला रोमांचित ड्रामा 'वन्स' अपाँ ए रेनबो' दृश्यों के साथ मिल कर लिखा। एज टीयर्स गो बाय' उनकी निर्देशित पहली फिल्म थी। आजकल वैलेन्टाइन (प्रेम-रोमांस) का समय चल रहा है और ऐसे में वैना कार-वाई की 'इन द मूड फॉर लव' दे खना एक बहुत सुकूनदायक अनुभव है। हॉन्काकाना के फिल्म निर्देशक एवं स्क्रीनप्यू राइटर

एवं स्क्रीनप्यू राइटर बने। जब वे मात्र पांच साल के थे उनकी मां उन्हें शंघाई से लेकर हॉन्काकाना चली आई, उनकी घोटल डॉयरेक्टर उनके पिता, उनका भाई और उनकी बहन वहीं शंघाई में रह गए। पहले वैना कार्ड-वाई ने ग्राफिक डिजाइनिंग की प्रौश्धिकण लिया और इसके बाद टीवी नाटक की शिक्षा ली। यहीं से उनके फिल्म में प्रवेश का रास्ता खुला। निर्देशक बनने के पहले वे एक स्क्रीनप्यू राइटर बने और जैसा कि रिवाज है स्क्रीनप्यू राइटिंग मिलजुल कर किया जाता है, वैना ने भी पहला जाता है। पहले स्त्री उसे मात्र लुभा रही थी पर बाद में दोनों में अच्छी दृह्यनिंग हो जाती है। इसी साल उन्होंने भविष्यो-म्युचुक फिल्म '2046' बनाई। एक साइंस फिक्शन के लिए खेल के जीतन में कुछ वर्षी में कई स्ट्रियों का प्रवेश होता है। फिल्म ने 48 प्रस्तुताएँ अपनी झोली में किए। 1995 में वैना कार-वाई ने 'फॉलन एंजल्स' बनाई। करीब ढेर घंटे की इस क्राइम-ड्रामा फिल्म में हॉन्का कॉना का एक पेशेवर गुंडा इस काम से निकलना चाहता है, इनता ही नहीं वह अपने पेशे की



फिल्म 'इन द मूर्फ फॉर लव' (2000 की) इस फिल्म का मूल शीर्षक ई बल्ड हार्पैंग है) में रंगों की बहार लेकर आते हैं। ये रंग आपको वास्तविक रूप से स्पर्श करते हैं, गहरे लाल, पीले, भूरे और उनकी गहन छटा मनमोहक है। रंगों न हो जब नायक-नायिका प्रेम के मूर्फ में हैं। मगर यही असली ट्रिवस्ट है, पूरी कहानी में वे दैहिक प्रेम नहीं करते हैं, ऐसा नहीं है कि कर नहीं सकते हैं, मगर उन्होंने तय किया है, वे ऐसा करेंगे नहीं। तय किया है, क्योंकि वे नहीं चाहते हैं वे ऐसा करें, जैसा उनके साथी कर रहे हैं। अगर वे ऐसा करते हैं, तो फिर नायक की पतनी और नायिका के पति और उन दोनों में अंतर क्या रह जाएगा? दोनों के साथियों का विवाहतर संबंध चल रहा है। अतः नायक मिस्टर चाक (टोनी लेउना) और नायिका सुली-जेन (मैरी चेउना) बार-बार मिलते हैं, कभी सिंदियों पर, कभी सङ्कट पर, कभी होटल से खाना ले जाते हुए, रमर सोने के लिए वे अपने-अपने घर चले जाते हैं। समय 1962 का है और स्थान हॉन्नाकॉन्ना का भीड़ भरा इलाका। दोनों पड़ोसी हैं, अतः टकराना होगा ही। इस अनेकी प्रेम कहानी को एक बार देखना बनता है, आप दोबारा इसे देखना चाहेंगे। फिल्म दिखती है कि लाई (टोनी लेउना) तथा हो (लेस्ट्री चेउना) दोनों साथ रहते हुए सदा झागड़ते हैं, उनका एक साथ रहना कठिन है, मगर एक-दूसरे के बिना रह भी नहीं सकते हैं। फिल्म हॉन्नाकॉन्ना, जापान तथा साउथ कोरिया का को-प्रोडक्शन है। 11 जुलाई 1958 को चीन के शंघाई में जन्मे वैना रोमांटिक ड्रामा 'वन्स अपैन ए रेनबो' दूसरों के साथ मिल कर लिखा। 'एज ट्रैयर्स गो बॉय' उनकी निर्देशन तथा पहली फिल्म थी। तीन साल बाद 1990 में उन्होंने 'डेज ऑफ बीइंग वाइल्ड' बनाई। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चाक्षुष रूप से अनोखे, ईंग्लिश विशेषता तथा भावात्मक फिल्म निर्देशक के रूप में पहचाने जाने वाले वैना कार-वाई की पहली दोनों फिल्मों को खास सफलता नहीं मिली, लेकिन उनकी तीसरी फिल्म 'चुनाकिंग एक्सप्रेस' (1994) ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय सिने-फ्लक पर स्थापित कर दिया। 8 पुरस्कार जीतने वाली इस फिल्म में हॉन्नाकॉन्ना के दो उदास पुलिस वालों को प्यार होता है, एक को एक रहस्यमयी अंडरवर्ल्ड और उत से और दूसरे को एक खूबसूरत वायवी लेटनाइट क्लब की वेट्रेस से। इस फिल्म ने टैरेनीना को आर्किरिंग किया और वैना की फिल्में अमेरिका में प्रवेश पा गई। सदौर काला चशमा फहने वाले वैना एकशन सिन में हैँडेल्ट कैमरे का उपयोग करते हैं। 2007 में वैना ने 'माई हूबेरी नाइट्स' बनाई, जिसे उन्होंने लॉरेस ब्रूक के साथ मिल कर लिखा। इस फिल्म में आपको नोरा जॉन्स, जूड लॉ, नैटली पोर्टमैन जैसे हॉलीवुड के अभिनेता नहर आये। एक एकाकी स्त्री अपने आत्म की खोज में अमेरिका के आर-पार की यात्रा पर निकलती है, रास्ते में तमाम तरह के लोगों से मिलती है। यह उनकी पहली इंग्लिश फिल्म है, इसकी शूटिंग भी अमेरिका में हुई है। 2004 में करीब एक घंटे की फिल्म 'द हैंड' बनाते हैं, जिसमें एक दर्जी का सहायक एक स्त्री ग्राहक के कपड़े डिजाइन करता







